हिन्द खोज: अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका, ISSN: 3048-9873
खंड 2 अंक 2, जुलाई – दिसंबर 2024

आधुनिक हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना: नागार्जुन और धूमिल के सन्दर्भ में

कट्टा विष्णुवर्धन रेड्डी

स्कूल सहायक, जिला परिषद उच्च पाठशाला अंडवेल्ली, जोगुलंबा गदवाल जिला, तेलंगाणा

भूमिका

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध हिन्दी कविता के लिए एक संक्रमण काल रहा है, जिसमें कविताओं ने सौंदर्यबोध से हटकर सामाजिक यथार्थ को केंद्र में रखा। इस काल में कविता ने जन-सरोकारों को अपनाया और आम जनता की आवाज़ बनने का प्रयास किया। इस परिवर्तन की धारा में नागार्जुन और धूमिल जैसे कवियों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। इन कवियों ने शब्दों को हथियार बनाकर सत्ता, अन्याय, विषमता और शोषण के विरुद्ध कविताएँ लिखीं। उनकी कविताओं ने पाठकों को झकझोरा और कवि को सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमि पर स्थापित किया।

नागार्जुन का कवि व्यक्तित्व:
नागार्जुन हिन्दी के ऐसे विरल कवि हैं जो संस्कृत, पाली, मैथिली और हिन्दी में समान रूप से दक्ष थे। वे वैचारिक रूप से मार्क्सवादी थे और जन-संघर्षों में भाग लेने से नहीं चूकते थे। उनकी कविताएँ किसी भी प्रकार की आडंबरपूर्ण भाषा या छंद से मुक्त होती हैं और सीधे हृदय में उतरती हैं। वे जनता की भाषा में जनता की बात करते हैं।

'भोजपुर' और 'अकाल और उसके बाद' जैसी कविताओं में चेतना:
'भोजपुर' कविता में उन्होंने किसानों के विद्रोह और साहूकारों के अत्याचार के विरुद्ध जन-जागृति का स्वर उठाया। वहीं 'अकाल और उसके बाद' में वे भूख, बेबसी और व्यवस्था की असफलता का तीखा चित्रण करते हैं: "क्या तुम्हें बुरा लगता है भूख से बिलबिलाते बच्चे देखना?" यह पंक्ति पाठक को भीतर तक झकझोर देती है।

धूमिल की कविता में जनस्वर:
धूमिल की कविताएँ व्यवस्था की पोल खोलती हैं। वे कहते हैं — "लोकतंत्र एक ऐसा तमाशा है, जिसमें जनता हर पाँच साल बाद अपने शोषण के लिए सरकार चुनती है।" उनकी कविताओं में राजनीति, नौकरशाही, भ्रष्टाचार और सामाजिक व्यवस्था पर तीखा कटाक्ष है।

'मोचीराम' कविता और वर्गचेतना:
इस कविता में एक मोची के माध्यम से धूमिल ने बताया कि सच्चा विश्लेषण आम आदमी ही कर सकता है। मोचीराम देश की राजनीति को अपनी भाषा में इस प्रकार व्यक्त करता है कि वह पाठक को सोचने पर विवश करता है। यह कविता निम्नवर्ग की चेतना का प्रतिनिधित्व करती है।

स्त्री विमर्श और सामाजिक भूमिका:
नागार्जुन की 'उषा' और 'बतंगड़' जैसी कविताओं में स्त्रियों की भूमिका, उनकी संवेदनाएं और संघर्ष दिखाई देता है। धूमिल की कविताओं में यद्यपि स्त्री एक सीमा तक प्रतीक बनकर आती है, लेकिन वह भी व्यवस्था के शोषण की शिकार है।

कविता और भाषा का प्रयोग:
दोनों कवियों की भाषा जन-जीवन से जुड़ी हुई है। नागार्जुन की भाषा सहज, सरस और व्यावहारिक है, जबकि धूमिल की भाषा खुरदरी, तंजपूर्ण और व्यंग्यात्मक है। धूमिल भाषा को शस्त्र मानते हैं और उसे अन्याय के विरुद्ध प्रयुक्त करते हैं।

नागार्जुन बनाम धूमिल: एक तुलनात्मक दृष्टि:
जहाँ नागार्जुन समाज के सभी वर्गों की पीड़ा को चित्रित करते हैं, वहीं धूमिल विशेष रूप से व्यवस्था और सत्ता के विरुद्ध मुखर होते हैं। नागार्जुन की कविताओं में संवेदना और करुणा का प्रवाह अधिक है, जबकि धूमिल की कविताएँ तटस्थ नहीं रहतीं, वे सीधा प्रश्न करती हैं। दोनों कवियों ने हिन्दी कविता को नवचेतना दी।

निष्कर्ष

नागार्जुन और धूमिल हिन्दी कविता के ऐसे दो स्तम्भ हैं जिन्होंने कविता को केवल कलात्मकता से ऊपर उठाकर सामाजिक औजार बना दिया। उनकी कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि आज भी शोषण, असमानता और सामाजिक अन्याय विद्यमान हैं। इन कवियों की रचनाएँ पाठकों को केवल पाठ नहीं देतीं, बल्कि विचार, संवाद और प्रतिरोध की दिशा भी देती हैं। हिन्दी कविता को जनपक्षधर और सामाजिक बनाने में इनका योगदान अविस्मरणीय है।

संदर्भ

[1]. नागार्जुन. *युगधारा.* राजकमल प्रकाशन.
[2]. नागार्जुन. *पत्रहीन नग्न गाछ.* साहित्य अकादमी.
[3]. धूमिल. *संसद से सड़क तक.* राजकमल प्रकाशन.
[4]. धूमिल. *कल सुनना मुझे.* वाणी प्रकाशन.
[5]. यादव, रामविलास. *नागार्जुन की सामाजिक दृष्टि.*
[6]. त्रिपाठी, सुरेश. *धूमिल की कविता और राजनीति.*
[7]. मिश्र, अवधेश. *हिन्दी कविता में प्रतिरोध की परंपरा.*
[8]. चौधरी, मनोज. *धूमिल: कविता का आम आदमी.*
[9]. पाठक, नामवर. *नयी कविता की पहचान.* वाणी प्रकाशन.
[10]. सिंह, काशीनाथ. *हिन्दी कविता का जनपक्ष.*
[11]. वाजपेयी, अशोक. *समकालीन कविता और समाज.*
[12]. यादव, सुरेश. *नागार्जुन की कविताओं में किसान चेतना.*
[13]. चतुर्वेदी, विनोद. *धूमिल की कविता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण.*
[14]. सिंह, नवल किशोर. *जनकवि नागार्जुन.*
[15]. मिश्रा, गिरीश. *धूमिल: कविता और राजनीति.*
[16]. पांडे, सुरेश. *हिन्दी कविता का सामाजिक स्वर.*
[17]. जोशी, अश्विनी. *धूमिल की भाषा और शैली.*
[18]. शुक्ल, गोपाल. *नागार्जुन का काव्य यथार्थ.*
[19]. पाण्डेय, अजय. *धूमिल और समकालीन कविता.*
[20]. राही, अमरनाथ. *जनपक्षधर कविता: एक आलोचनात्मक दृष्टि.*